Roll No. .....

(05/24)

19214

M.A. EXAMINATION

(For Regular Batch 2022 & Onwards)

(Second Semester)

HINDI

MA/HIN/2/DSC5

कबीरदास : एक विशेष अध्ययन

Time : Three Hours *Maximum Marks : 70*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 5×2=10

(क) 'हरि जननी मैं बालक तोरा, काहे न अवगुण बकसहु मोरा'

पंक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

(ख) गुरु के विषय में कबीर के क्या विचार हैं ?

(ग) कबीर की प्रेम-साधना पर टिप्पणी कीजिए ।

(घ) 'बीजक' के कितने भाग हैं ? इनके नाम बताइए।

(ङ) कबीर के 'राम' की व्याख्या कीजिए ।

2. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 5×3=15

(क) सतगुर की महिमा अनंत, अनंत किया उपगार ।
लोचन अनंत उघाड़ियाँ, अनँत दिखावणहार ।।
माया दीपक नर पतँग, भ्रमि-भ्रमि इवै पडंत ।
कहै कबीर गुरु ग्यान थैं, एक आध उबरंत ।।

अथवा

राम रसाइन प्रेम रस पीवत अधिक रसाल ।
कबीर पीवण दुलभ है, माँगे सीस कलाल ।।
हरि रस पीया जाणिये, जे कबहूँ न जाइ खुमार।
मैमंता घूमत रहै, नाँही तन की सार ।।

(ख) जिनि नटवे नटसारी साजी, जो खेलै सो दीसे बाजी ।।
मो बपरा थें जोगपति ढीठी, सिव बिरंचि नारद नहीं दीठी ।।

आदि अंति जो लीन भये हैं, सहजै जानि संतोख रहे हैं ।।
सहजै राम नाम ल्यौ लाई, राम नाम कहि भगति दिढाई ।
राम नाम जाका मन माँनाँ, तिन तौ निज सरूप पहिचानाँ ।।
निज सरूप निरंजना निराकार, अपरंपार अपार ।
राम नाथ लाइस जियरे, जिनि भूलै बिस्तार ।।

अथवा

तुम्हरे चरन कवल मन राता, गुन निरगुन के तुम्ह निज दाता ।।
जहुवां प्रगटि बजावहु जैसा, जस अनभै कथिया तिनि तैसा ।।
बाजे जंत्र नाद धुनि होई, जे बजावै सो औरे कोई ।।
बाज़ी नाचौ कौतिग देखा, जो नचावै सो किनहूं न पेखा ।।
आप आप थैं जानिये, है पर नाहीं सोइ ।।
कबीर सुपिनै केर धंन ज्यू, जानत हाथि न होइ ।

CamScanner

(ग) बहुत दिनन थे मैं प्रीतम पाये, भाग बड़े घरि बैठे आये ।। टेक ।।

मंगलवार माँहि मन राखौं, राम रसाँइन रसना चाषौं ।

मँदिर माँहि भयो उजियारा, ले सुतो अपना पीव पियारा ।।

मैं रनि राती जे निधि पाई, हमहिं कहाँ यह तुमहि बड़ाई ।

कहै कबीर मैं कछु न कीन्हा सखी सुहाग मोहि दीन्हा ।।

अथवा

निरगुण राँम निरगुण राँम जपहु रे भाई,

अविगति की गति लखी न जाई ।। टेक ।

चारि बेद जाकै सुमृत पुरानाँ नौ व्याकरनाँ मरम न जाँनाँ ।।

सेस नाग जाकै गरड समानाँ, चरन कवल कँवला नहीं जाँनाँ ।।

कहै कबीर जाकै भेदै नाँहीं, निज जन बैठे हरि की छाहीं ।।

3. कबीर की भक्ति भावना की विवेचना कीजिए । 15

अथवा

कबीर के मानवतावादी दृष्टिकोण को चित्रित कीजिए ।

4. कबीर की सामाजिक चेतना की विस्तृत चर्चा कीजिए । 15

अथवा

संत काव्य की प्रवृत्तियों पर अपने विचार प्रकट कीजिए ।

5. कबीर की दार्शनिक चिंतन को स्पष्ट कीजिए । 15

अथवा

रचना-शैली की दृष्टि से कबीर काव्य का मूल्यांकन कीजिए ।